सम्पादकीय

पिछले दो वर्षों से कोरोना के कारण बच्चों की ज़िन्दगी पर बहुत असर पड़ा है। स्कूल आधे-अधूरे से खुले हैं और उनपर हर पल बन्द होने की अनिश्चितता का साया बना हुआ है। स्कूलों में और कई जगह बच्चों के साथ कार्य के कई तरह के प्रयास हुए हैं। इन प्रयासों में कई नई बातें जानने, समझने को भी मिली हैं। यह भी स्पष्ट रूप से दिखाई दिया कि स्कूल बच्चों के जीवन का कई तरह से अहम हिस्सा हैं। वह न सिर्फ़ अकादमिक विकास में वरन् सामाजिक, मानसिक और शारीरिक विकास में भी अहम भूमिका निभाते हैं। इस महामारी और इस अनिश्चितता का अभी अन्त नहीं हुआ है और जो मौजूदा स्थितियाँ हैं उनमें हमें लगातार नए प्रयोग कर बच्चों के लिए उपयुक्त अनुभव बनाते रहने की आवश्यकता है। इसके लिए एक दूसरे के प्रयासों व अनुभवों से सीखते रहने की आवश्यकता है। हम चाहेंगे कि इस दौर में आपने जो नया महसूस किया और सीखा वह इस पत्रिका के माध्यम से अन्य लोगों से भी साझा करें। पत्रिका का अगला अंक गणित सीखने-सिखाने पर केन्द्रित है, अतः उस सन्दर्भ में अपने नए-पुराने प्रयासों व अनुभवों को विश्लेषणात्मक ढंग से लिखकर भेजेंगे तो सभी को उनपर विचार करने का मौक़ा मिलेगा।

पाठशाला का दसवाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। **परिप्रेक्ष्य** स्तम्भ के अन्तर्गत विजय प्रकाश जैन का आलेख है, *जेंडर और बच्चे : प्राथमिक कक्षा के बच्चों से बातचीत का एक अनुभव।* लेखक ने कक्षा में बच्चों के साथ बनाई गई एक कहानी को आधार बनाकर समाज में प्रचलित जेंडर असमानता और संवैधानिक मूल्यों पर समझ बनाने की अपनी कोशिश का अनुभव बयाँ किया है। आलेख बताता है कि प्राथमिक स्तर के बच्चे भी घर और समाज में मौजूद जेंडर की रूढ़ धारणाएँ लेकर आते हैं, अगर इनपर बातचीत न हो तो ये धारणाएँ धीरे-धीरे गहरी होती चली जाती हैं। इनपर बच्चों के साथ गम्भीरता से परन्तु सहज क्रम से बातचीत करने की ज़रूरत होती है।

शिक्षणशास्त्र स्तम्भ के अन्तर्गत इस अंक में 7 आलेख हैं। *मैं महापल्ली में रहता हूँ* आलेख में मीनू पालीवाल शुरुआती पढ़ना-लिखना सीख रहे एक बच्चे की लिखावट के नमूने का विश्लेषण करते हुए लिखना सीखने की बारीक़ियों के बारे में बात करती हैं। ये आलेख शुरुआती लेखन के आकलन की एक समुचित दृष्टि देता है। इस आकलन के आधार पर शिक्षक बच्चों के लेखन कौशल पर तार्किक और सुनियोजित ढंग से काम करने की समझ बना सकते हैं।

इसी स्तम्भ का दूसरा आलेख *भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं, चलो पता लगाएँ* नीतू यादव ने लिखा है। कक्षा में बच्चों के साथ 'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं' कहानी पर चर्चा के माध्यम से नीतू यादव ने बच्चों के अनकहे डर, भ्रान्तियों, अफ़वाहों और धारणाओं की बारीक़ परतों को खोलने का प्रयास किया है।

तीसरा आलेख *कहानियाँ आख़िर करती क्या हैं?* में लेखक ने कहानियों के शिक्षाशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय महत्त्व और प्रभाव का ब्योरा प्रस्तुत किया है। इसके लिए लेखक अनिल सिंह ने अपनी कक्षा में बच्चों के साथ कहानी कहने-सुनने के तीन अनुभवों को आधार बनाया है।

इस स्तम्भ का चौथा आलेख *पीयर इंस्ट्रक्शन शिक्षण पद्धति के मेरे अनुभव : सन्दर्भ विज्ञान शिक्षण* शिव पाण्डेय का है। इस लेख में लेखक ने विज्ञान की श्वसन अवधारणा पर बच्चों के साथ काम करने के लिए पीयर इंस्ट्रक्शन पद्धति को काम में लेने के अपने अनुभव प्रस्तुत किए हैं। यह पद्धति क्या है, इसे काम में लेते हुए शिक्षक को क्या-क्या तैयारी करनी पड़ती है, आदि के साथ ही उन्होंने इसकी योजना और चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला है। लेखक का कहना है कि यह पद्धति उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में बहुत ही कारगर है। अगला आलेख *बाल साहित्य की ज़रूरत,* बाल साहित्य के इस्तेमाल की आवश्यकता को रेखांकित करता है। लेखिका हेमवती चौहान विभिन्न कहानियों एवं किताबों के साथ किए गए काम का अनुभव रखते हुए इस बात पर ज़ोर देती हैं कि पढ़ने का आनन्द हर हाल में बने रहना चाहिए। एक सक्रिय पाठक बनने के लिए शुरुआती दिनों में साहित्य की उपलब्धता और उसका अनुभव बहुत ज़रूरी है।

इसी स्तम्भ का छठवाँ आलेख *आपदा में सामाजिक विज्ञान का चेहरा* सामाजिक विज्ञान शिक्षण में तात्कालिक सन्दर्भ के उदाहरणों की जगह की वकालत करता है। लेखिका अंजना त्रिवेदी ने कोविड महामारी के कारण हुई पूर्ण तालाबन्दी के हालात में बच्चों के परिवेश के निजी अनुभवों को कक्षा शिक्षण में लाने और उनपर समालोचनात्मक दृष्टि रखते हुए समाज विज्ञान की अवधारणाओं की समझ बनाने की बात कही है।

इस स्तम्भ का सातवाँ और अन्तिम आलेख *आरम्भिक भाषा शिक्षण : बातचीत एवं चित्रों की उपयोगिता* है। लेखिका हुमा नाज़ सिद्दीकी ने पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के साथ हुई अपनी बातचीत के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए दर्शाया है कि मौखिक भाषा कौशल और कक्षा में सहभागिता से बनने वाला आत्मविश्वास बच्चों के आगे सीखने की सीढ़ी बनता है। बच्चों के साथ बातचीत शुरू करने के क्या बिन्दु हो सकते हैं, इसके उदाहरण भी वे रखती हैं।

विमर्श स्तम्भ के तहत *बच्चों की भाषा के सम्मान के मायने : एक अनुभव* में लेखक द्रोण साहू कक्षा में उनके साथ घटित एक घटना का वर्णन करते हैं। वे बताते हैं कि इस घटना ने उन्हें बच्चों और उनकी भाषा का सम्मान करने के असल मायने समझने में मदद की।

कक्षा अनुभव स्तम्भ में इस बार तीन आलेख हैं। पहला आलेख *पद्य पाठ : बातचीत से भाषाई कौशल की ओर* कक्षा में बच्चों के साथ गीत एवं कविता के इस्तेमाल और उसके अनुभव पर आधारित है। लेखिका अनीता चमोली ने आलेख में अपने कक्षा अनुभवों के आधार पर यह बताने का प्रयास किया है कि गीत, कविताओं के इस्तेमाल से बच्चों में भाषाई कौशल के साथ-ही-साथ मानवीय मूल्यों और भावनात्मक विकास की राह सुगम होती है।

इस स्तम्भ के दूसरे आलेख *कहानी क्यों? कहानियाँ और समझ के विभिन्न आयाम* की लेखिका हैं अनीता ध्यानी। लेखिका ने कहानियों के इस्तेमाल और समझ के विभिन्न आयामों पर अनुभवपरक टिप्पणियाँ की हैं। कहानी पर कैसे काम किया जाए और किन बातों पर ध्यान दिया जाए, इन चीज़ों पर भी आलेख में विस्तारपूर्वक बात की गई है।

तीसरे आलेख *किताबों से सीखते बच्चे* में लेखक दिनेश पटेल ने लॉकडाउन के दौरान स्कूलों के बन्द होने पर मोहल्ला कक्षाओं और सामुदायिक पुस्तकालय के माध्यम से बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं और उनके अनुभवों का ब्योरा प्रस्तुत किया है। आलेख

दर्शाता है कि किताबों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताने से बच्चों में विविध कौशलों का विकास होता है।

पुस्तक चर्चा के अन्तर्गत इस अंक के लिए एस गिरधर की हालिया प्रकाशित किताब *साधारण लोग असाधारण शिक्षक* की समीक्षा निशा नाग ने की है। निशा नाग ने किताब की चर्चा करते हुए लिखा है कि सरकारी शिक्षा व्यवस्था में छाई निराशा के बीच कर्मठता और समर्पण की मिसाल बने शिक्षकों की ये सफल कहानियाँ उत्साह बढ़ाती हैं और हमारा भरोसा पक्का करती हैं।

साक्षात्कार के अन्तर्गत धार ज़िले के नवाचारी शिक्षक सुभाष यादव से सिद्धार्थ कुमार जैन की बातचीत प्रकाशित की जा रही है। विषय की गहरी समझ रखने वाले और बच्चों के साथ मानवीय रिश्ते बनाकर काम करने वाले सुभाष यादव शिक्षक बिरादरी के लिए एक उदाहरण हैं।

संवाद स्तम्भ के अन्तर्गत इस अंक में 'बच्चों का साथ-साथ सीखना' विषय पर शिक्षकों की बातचीत को प्रस्तुत किया गया है। साथ-साथ सीखने में समूह निर्माण, समूह का स्थाई या अस्थाई होना, संवैधानिक मूल्यों का विकास, आदि कई मुद्दों के सन्दर्भ में भी यह बातचीत एक समझ देती है।

हम अपने पाठकों और लेखकों को याद दिलाना चाहते हैं कि *पाठशाला* का आगामी यानी ग्यारहवाँ अंक प्रारम्भिक गणित और उसकी शिक्षण प्रक्रिया थीम पर आधारित होगा। इस अंक में गणित के सैद्धान्तिक आयामों के साथ ही स्कूलों में बच्चों के साथ गणित सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से अर्जित अनुभवों को भी लेख के रूप में शामिल किया जाएगा। उम्मीद है, हमें आपके अनुभवों के पिटारे से इस अंक के लिए ज़्यादा-से-ज़्यादा लेख प्राप्त होंगे।

हमें **पाठक चश्मा** स्तम्भ के लिए *पाठशाला* में छपने वाले लेखों के बारे में पाठकों की समालोचनात्मक टिप्पणियों की प्रतीक्षा रहेगी।

सम्पादक मण्डल